हिंदी विभाग

## POs & COs

प्रथम वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)

प्रथम सत्र

प्रष्नपत्र – 1 पाठ्यपुस्तक – साहित्य जगत

1. छात्रों की हिंदी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ाना तथा छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना ।
2. छात्रों को हिंदी के प्रतिनिधि गद्यकारों एवं कवियों से परिचित कराना ।
3. छात्रों में हिंदी भाशा के श्रवण, पठन एवं लेखन की क्षमताओं को विकसित कराना ।
4. निंबध कहानी,रेखाचित्र,एकांकी,रिपोर्ताज, संस्मरण, व्यंग्य आदि विधाओं के माध्यम से छात्रों का भावात्मक विकास कराना ।
5. छात्रों में नैतिक मूल्य, राश्ट्रीय मूल्य एवं उत्तदायित्व के प्रति आस्था निर्माण करना ।
6. छात्रों में राश्ट्र के प्रति प्रेम, राश्ट्रीय ऐक्य स्थापना एवं सामाजिक प्रतिबद्धता हेतु राश्ट्रभाशा हिंदी का प्रचार–प्रसार करना ।
7. छात्रों की विचार क्षमता तथा कल्पनाषीलता को बढ़ावा देना ।

प्रथम वर्श कला – हिंदी ( अनिवार्य)

प्रथम सत्र

प्रष्नपत्र – । पाठ्यपुस्तक – सृजनात्मक लेखन

1. हिंदी भाशा तथा व्याकरण का अध्ययन कराना ।
2. सृजनात्मक लेखन की विविध विधाओं (कविता,कहानी,यात्रावृत्त,रिपोर्ताज,साक्षात्कार,दृष्य–साहित्य, पत्रकारिता) से परिचित कराना ।
3. सृजनात्मक लेखन के विविध क्षेत्रों का परिचय कराना ।
4. सृजनात्मक लेखन के विविध क्षेत्रों के महत्त्व तथा उपयोगिता से परिचित कराना ।

प्रथम वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)

द्वितीय सत्र

प्रष्नपत्र – 2 पाठ्यपुस्तक – हिंदी गद्य साहित्य

1. छात्रों की हिंदी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ाना तथा छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना ।
2. छात्रों को हिंदी के प्रतिनिधि गद्यकारों एवं कवियों से परिचित कराना ।
3. छात्रों में हिंदी भाशा के श्रवण, पठन एवं लेखन की क्षमताओं को विकसित कराना ।
4. निंबध कहानी,रेखाचित्र,एकांकी,रिपोर्ताज, संस्मरण, व्यंग्य आदि विधाओं के माध्यम से छात्रों का भावात्मक विकास कराना ।
5. छात्रों में नैतिक मूल्य, राश्ट्रीय मूल्य एवं उत्तदायित्व के प्रति आस्था निर्माण करना ।
6. छात्रों में राश्ट्र के प्रति प्रेम, राश्ट्रीय ऐक्य स्थापना एवं सामाजिक प्रतिबद्धता हेतु राश्ट्रभाशा हिंदी का प्रचार–प्रसार करना ।

7. छात्रों की विचार क्षमता तथा कल्पनाषीलता को बढ़ावा देना ।

प्रथम वर्श कला – हिंदी ( अनिवार्य)
द्वितीय सत्र
प्रष्नपत्र – ठ पाठ्यपुस्तक – व्यावहारिक लेखन

1. हिंदी के विविध रूपों का परिचय कराना ।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी का परिचय कराना ।
3. पत्राचार का स्वरूप तथा प्रकारों का परिचय कराना ।
4. अनुवाद,विज्ञापन और समाचार लेखन से परिचित कराना ।
5. व्यावहारिक लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता से परिचित कराना ।

द्वितीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
तृतीय सत्र
प्रष्नपत्र – 3 पाठ्यपुस्तक – अस्मितामूलक विमर्ष और हिंदी गद्य साहित्य

1. कथा साहित्य का स्वरूप, तत्व एवं प्रकारों का अध्ययन कराना ।
2. समीक्षा मानदण्डों के आधार पर अध्ययन कराना ।
3. कथेत्तर साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन कराना ।
4. कथा और कथेत्तर साहित्य का वर्तमान प्रासंगिकता के साथ अध्ययन करना ।

द्वितीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
तृतीय सत्र
प्रष्नपत्र – 4 पाठ्यपुस्तक – हिंदी संतकाव्य तथा राश्ट्रीय काव्यधारा

1. छात्रों की हिंदी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ाना तथा छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना ।
2. छात्रों को मध्यकालीन हिंदी कवियों से परिचित कराना ।
3. छात्रों में नैतिक मूल्य,राश्ट्रीय मूल्य एवं उत्तरदायित्व के प्रति आस्था निर्माण कराना ।
4. छात्रों को आधुनिक हिंदी कविता में चित्रित विविध विमर्षों से परिचित कराना ।

द्वितीय वर्श कल ा– हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
चतुर्थ सत्र
प्रष्नपत्र – 5 पाठ्यपुस्तक – रोजगारपरक हिंदी

1. छात्रों में हिंदी में कार्य करने की विचार क्षमता, कल्पनाषीलता एवं रूचि विकसित करना ।
2. रोजगार उन्मुख षिक्षा एवं कौषल प्रदान कराना ।
3. कार्यालय और व्यवसाय में हिंदी प्रयोग का कौषल ज्ञानविकसित कराना ।
4. अनुवाद और व्यावहारिक लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता से परिचित कराना ।

5. छात्रों में हिंदी भाशा के श्रवण एवं लेखन काषल को विकसित कराना

द्वितीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
चतुर्थ सत्र
प्रष्नपत्र – 6 अस्मितामूलक विमर्ष और हिंदी पद्य साहित्य
पाठ्यपुस्तक – कितने प्रष्न करूँ–ममता कालिया

1. छात्रों से हिंदी कवियों से परिचित कराना ।
2. छात्रों में हिंदी भाशा के श्रवण एवं लेखन कौषल को विकसित कराना ।
3. छात्रों की हिंदी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ाना तथा छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना ।
4. छात्रों में नैतिक मूल्य, राश्ट्रीय मूल्य एवं उत्तदायित्व के प्रति आस्था निर्माण करना ।

तृतीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
पंचम सत्र
प्रष्नपत्र – 7 विधा विषेश का अध्ययन
पाठ्यपुस्तक – दिल्ली उँचा सुनती है(नाटक)–कुसुम कुमार

1.नाटककार कुसुम कुमार की बहुमुखी प्रतिभा से परिचित कराना ।
2. नाटककार कुसुम कुमार के साहित्य से परिचित कराना ।
3. नाटककार कुसुम कुमार की विचारधारा से परिचित कराना ।
4. नाटककार कुसुम कुमार के निर्धारित ग्रंथ का सूक्ष्म आलोचनात्मक अध्ययन कराना।
5. लेखिका के नाटककार के रूप में साहित्यिक स्थान को निर्धारित कराना ।

तृतीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
पंचम सत्र
प्रष्नपत्र – 8 साहित्यषास्त्र

1. साहित्य निर्मिती की प्रकिया का बोध कराना ।
2. साहित्य/काव्य के विभिन्न अंगों, भेदों से परिचित कराना।
3. साहित्य/काव्य की नवीन विधाओं से परिचित कराना।
4. समीक्षा सिद्धांतों से परिचित कराना।
5. साहित्य/काव्य के तत्वों से परिचित कराना।
6. अलंकरों से परिचित कराना।

तृतीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
पंचम सत्र
प्रष्नपत्र – 9 हिंदी साहित्य का इतिहास

1. हिंदी भाशा तथा साहित्य की विकास यात्रा से अवगत कराना।

2. हिंदी साहित्य की विकास यात्रा में हिंदी भाशा के माध्यम से अलग–अलग विचारधारा और प्रवृत्तियों से अवगत कराना।
3. छात्रों में साहित्य समझने तथा उसका आस्वादन, मूल्यांकन करन की दृश्टि को बढ़ाना।
4. छात्रों को साहित्य के संदर्भ में विभिन्न साहित्यिक विधाओं के विकास कम से परिचित कराना।
5. छात्रों को युगीन सामाजिक,राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रक्ष्य में हिंदी से अवगत कराना।
6. इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत काल विभाजन और नामकरण को जानने के लिए प्रेरित करना।
7. हिंदी साहित्य के अंतर्गत गद्य–पद्य विधा और उसके भेदों,उपभेदों से अवगत कराना।
8. हिंदी के प्रमुख संत,कवि,उनकी रचनाएँ और उनका समाजसुधार में योगदान से परिचित कराना।
9. आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के संत, महात्मा, लेखक, कवियों की विचारधारा और उनके द्वारा निर्मित साहित्य का सामान्य परिचय कराना।

तृतीय वर्श कला–हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
पंचम सत्र
प्रष्नपत्र – 10 प्रयोजनमूलक हिंदी

1. हिंदी में कार्य करने की रूचि विकसित करना।
2. रोजगार उन्मुख षिक्षा एवं कौषल्य प्रदान कराना।
3. पारिभाशिक षब्दावली से परिचित कराना।
4. सरकारी पत्राचार के स्वरूप का परिचय कराना।
5. जनसंचार एवं इलेक्ट्रानिक माध्यमों से परिचय कराना।
6. अनुवाद स्वरूप, महत्त्व तथा उपयोगिता से परिचित कराना।
7. रोजगार परक हिंदी की उपयोगिता स्पश्ट कराना।

तृतीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
पंचम सत्र
प्रष्नपत्र – 11 भाशा विज्ञान और हिंदी भाशा

1. भाशा के विविध रूपों का परिचय कराना।
2. भाशा विज्ञान का सामान्य परिचय कराना।
3. हिंदी भाशा एवं लिपि के उद्भव और विकास का परिचय कराना।
4. भाशा की षुद्धता के प्रति छात्रों को जागृत करना।
5. मानक हिंदी वर्तना और व्याकरण से छात्रों को परिचित कराना।

तृतीय वर्श कला–हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
शश्ठ सत्र

प्रष्नपत्र – 12 विधा विषेश का अध्ययन
पाठ्यपुस्तक – अंतिम साक्ष्य (उपन्यास)–चंद्रकांता

1. उपन्यास के तात्विक स्वरूप का परिचय देना।
2. उपन्यासकार के व्यक्तित्व एवं कृतिव से परिचित कराना।
3. रचना विषेश का महत्त्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षा की क्षमता विकसित कराना।
5. पाठ्यकम में निर्धारित उपन्यास की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

तृतीय वर्श कला–हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
शश्ठ सत्र
प्रष्नपत्र – 13 साहित्यषास्त्र और आलोचना

1. साहित्य निर्मिती की प्रकिया का बोध कराना ।
2. महाकाव्य तत्वों तथा विभिन्न अंगों, भेदों से परिचित कराना।
3. साहित्य/काव्य की नवीन विधाओं से परिचित कराना।
4. आलोचना सिद्धांतों से परिचित कराना।
5. एकांकी के तत्वों से परिचित कराना।

तृतीय वर्श कला–हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
शश्ठ् सत्र
प्रष्नपत्र – 14 हिंदी साहित्य का इतिहास

1. हिंदी भाशा तथा साहित्य की विकास यात्रा से अवगत कराना।
2. हिंदी साहित्य की विकास यात्रा में हिंदी भाशा के माध्यम से अलग–अलग विचारधारा और प्रवृत्तियों से अवगत कराना।
3. छात्रों में साहित्य समझने तथा उसका आस्वादन, मूल्यांकन करन की दृश्टि को बढ़ाना।
4. छात्रों को साहित्य के संदर्भ में विभिन्न साहित्यिक विधाओं के विकास कम से परिचित कराना।
5. छात्रों को युगीन सामाजिक,राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रक्ष्य में हिंदी से अवगत कराना।
6. इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत काल विभाजन और नामकरण को जानने के लिए प्रेरित करना।
7. हिंदी साहित्य के अंतर्गत गद्य–पद्य विधा और उसके भेदों, उपभेदों से अवगत कराना।
8. हिंदी के प्रमुख संत,कवि, उनकी रचनाएँ और उनका समाजसुधार में योगदान से परिचित कराना।
9. आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के संत, महात्मा, लेखक, कवियों की विचारधारा और उनके द्वारा निर्मित साहित्य का सामान्य परिचय कराना।

तृतीय वर्श कला–हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
शश्ठ् सत्र
प्रष्नपत्र – 15 प्रयोजनमूलक हिंदी

1. हिंदी में कार्य करने की रूचि विकसित करना।
2. रोजगार उन्मुख षिक्षा एवं कौषल्य प्रदान कराना।
3. पारिभाशिक षब्दावली से परिचित कराना।
4. सरकारी पत्राचार के स्वरूप का परिचय कराना।
5. जनसंचार एवं इलेक्ट्रानिक माध्यमों से परिचय कराना।
6. अनुवाद स्वरूप, महत्त्व तथा उपयोगिता से परिचित कराना।
7. रोजगार परक हिंदी की उपयोगिता स्पश्ट कराना।

तृतीय वर्श कला – हिंदी ( विषेश ऐच्छिक)
शश्ठ सत्र
प्रष्नपत्र – 16 भाशा विज्ञान और हिंदी भाशा

1. भाशा के विविध रूपों का परिचय कराना।
2. भाशा विज्ञान का सामान्य परिचय कराना।
3. हिंदी भाशा एवं लिपि के उद्‌भव और विकास का परिचय कराना।
4. भाशा की षुद्‌धता के प्रति छात्रों को जागृत करना।
5. मानक हिंदी वर्तना और व्याकरण से छात्रों को परिचित कराना।